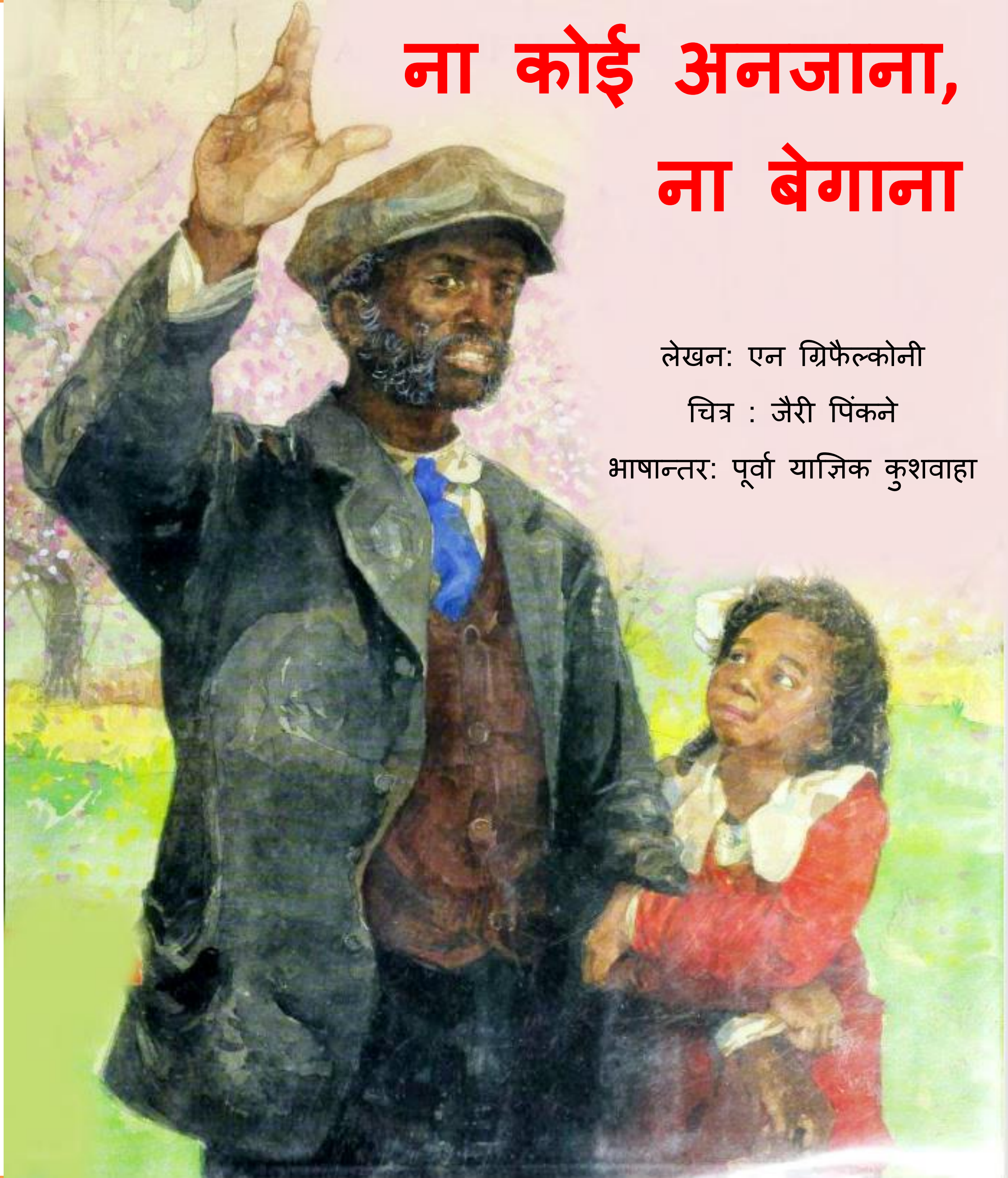
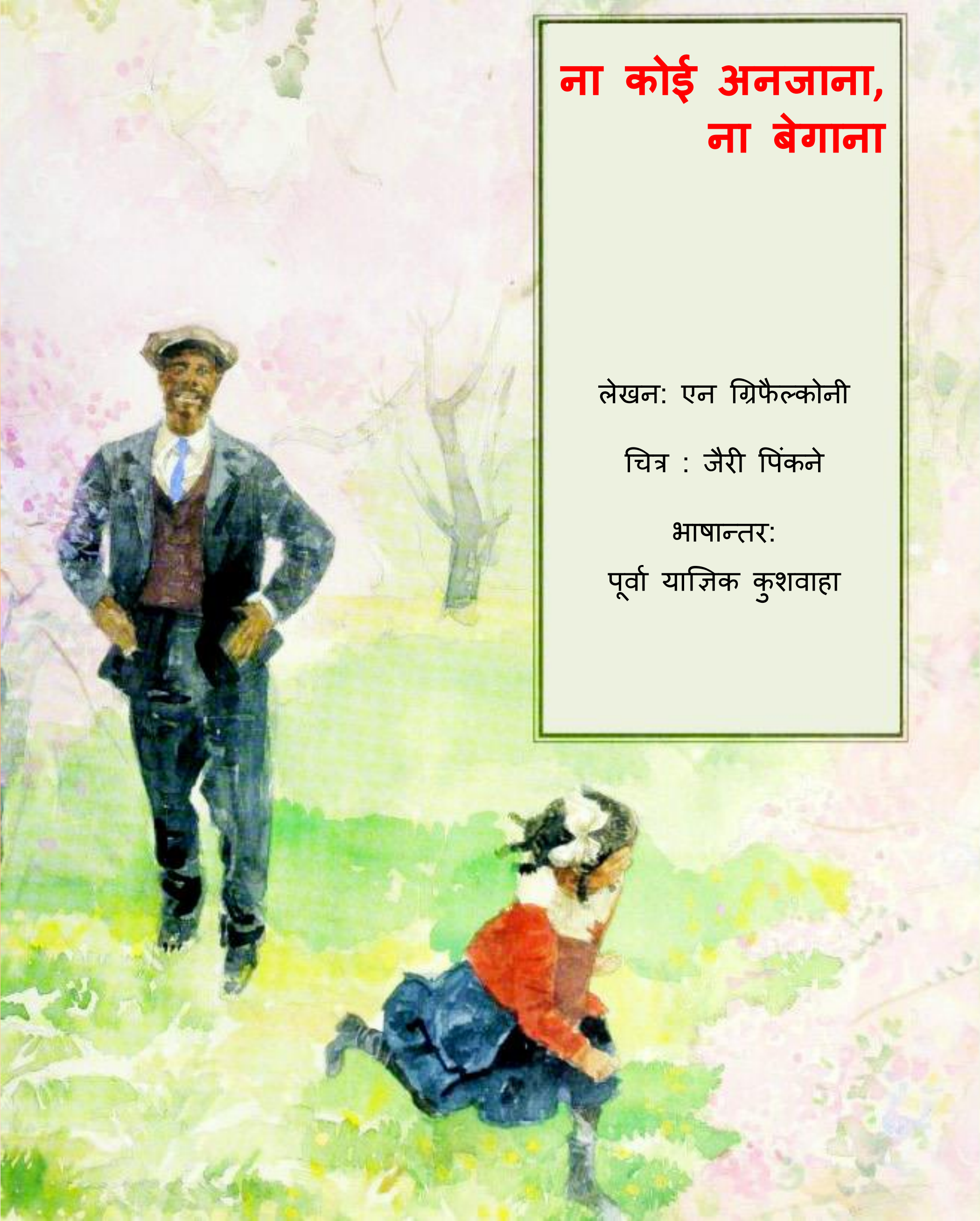
ना कोई अनजाना, ना बेगाना

लेखन: एन ग्रिफैल्कोनी

चित्र : जैरी पिंकने

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





ना कोई अनजाना, ना बेगाना

लेखन: एन ग्रिफैल्कोनी

चित्र : जैरी पिंकने

भाषान्तर:

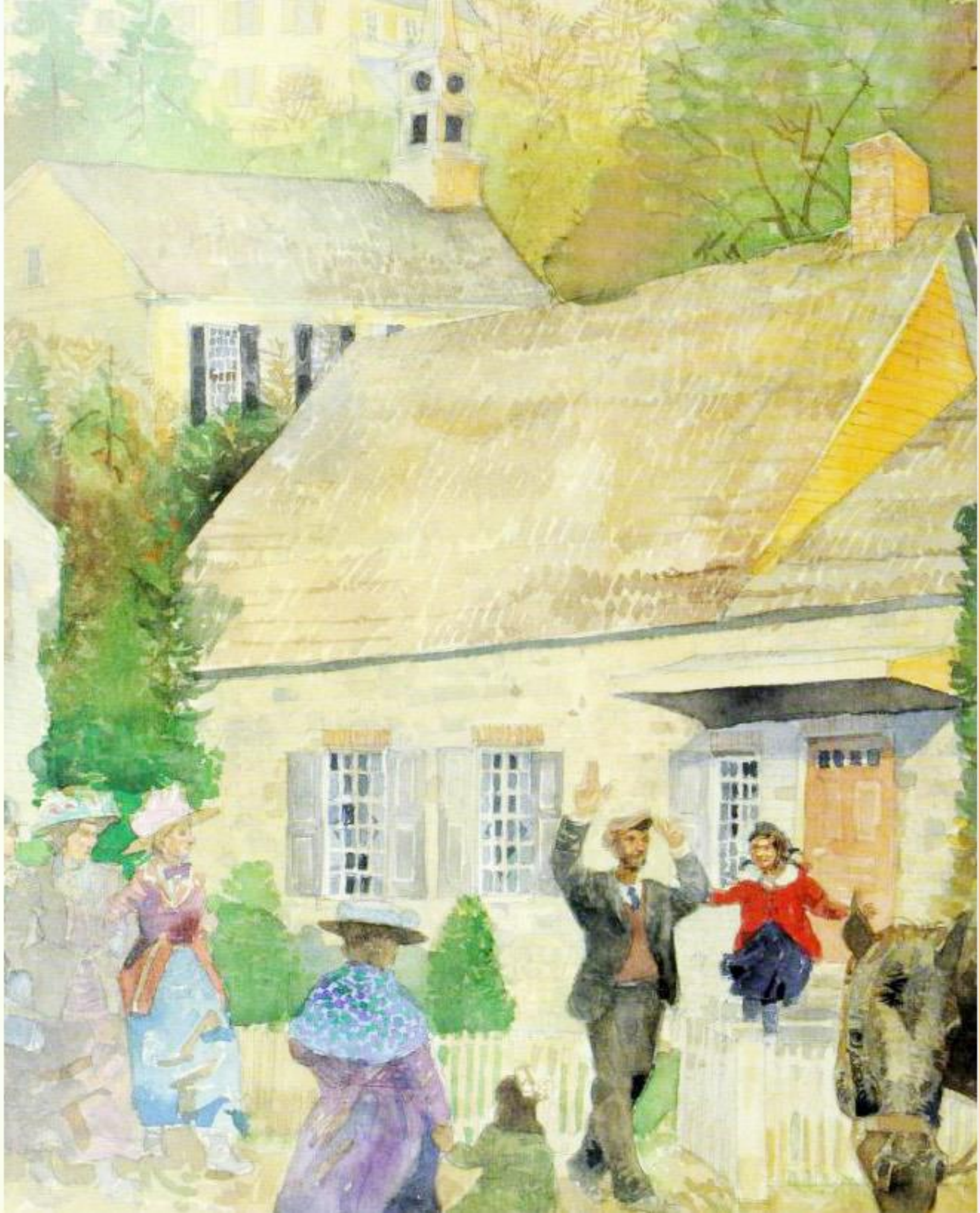
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सभी मददगार दिल वालों के लिए - ए. जी.

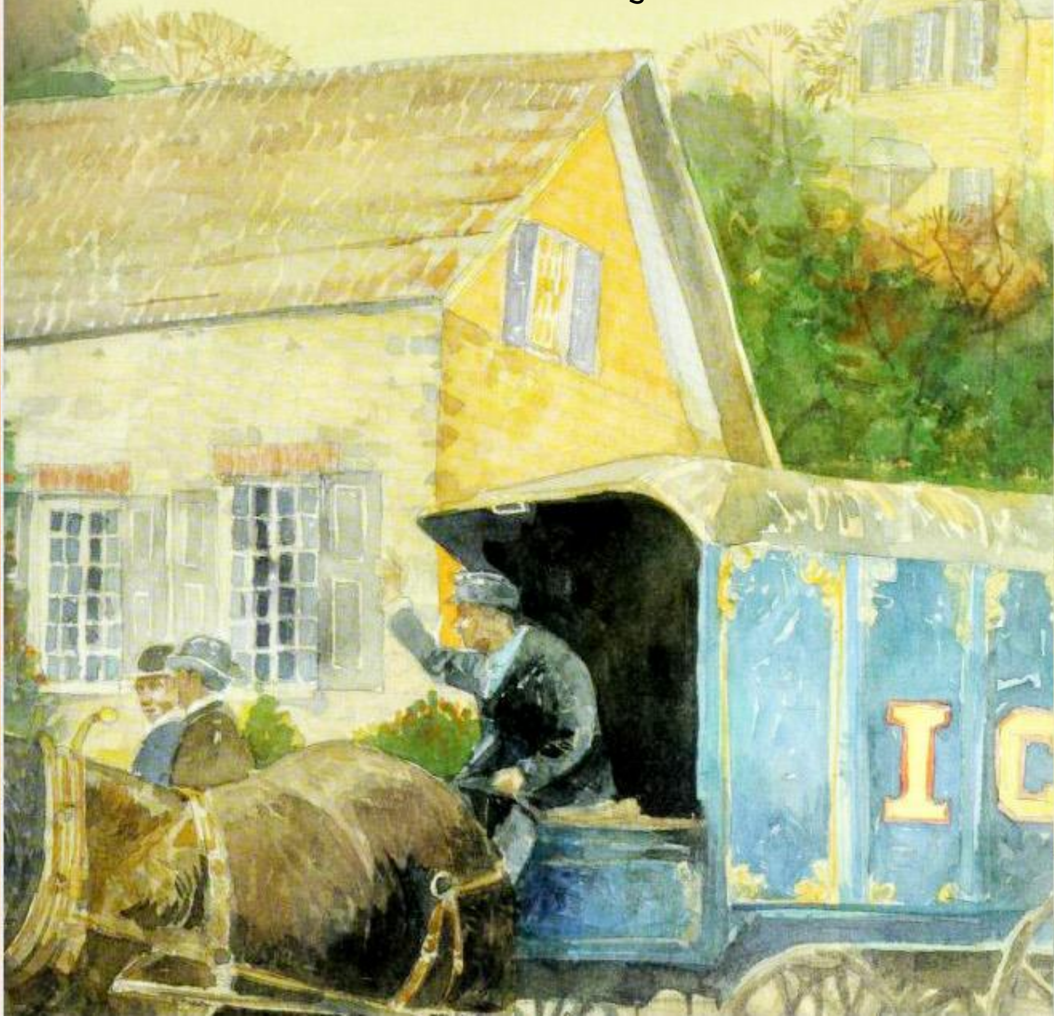
चार्ल्स एल. ब्लॉकसन के लिए - जो लौ के रखवाले हैं - जे. पी.





बहुत बहुत पहले, जब मैं एक नन्ही, छोटी-सी लड़की थी, मेरे नाना हमारे सेब बागान के साप्ताहिक दौरे पर पहली बार मुझे भी साथ ले गए।

''वह ज़मीन का आख़िरी टुकड़ा है जिसे मैंने कस्बे में आ बसने के बाद भी रख रखा है,'' हरेक गुज़रने वाले को हाथ हिला ''हैलो'' कहते नाना ने मुझे बताया।



''नाना!'' मैं उनके साथ चल पाने के लिए कुछ दौड़ती हुई बोली। ''आप इतने सारे लोगों को भला जानते कैसे हैं?''

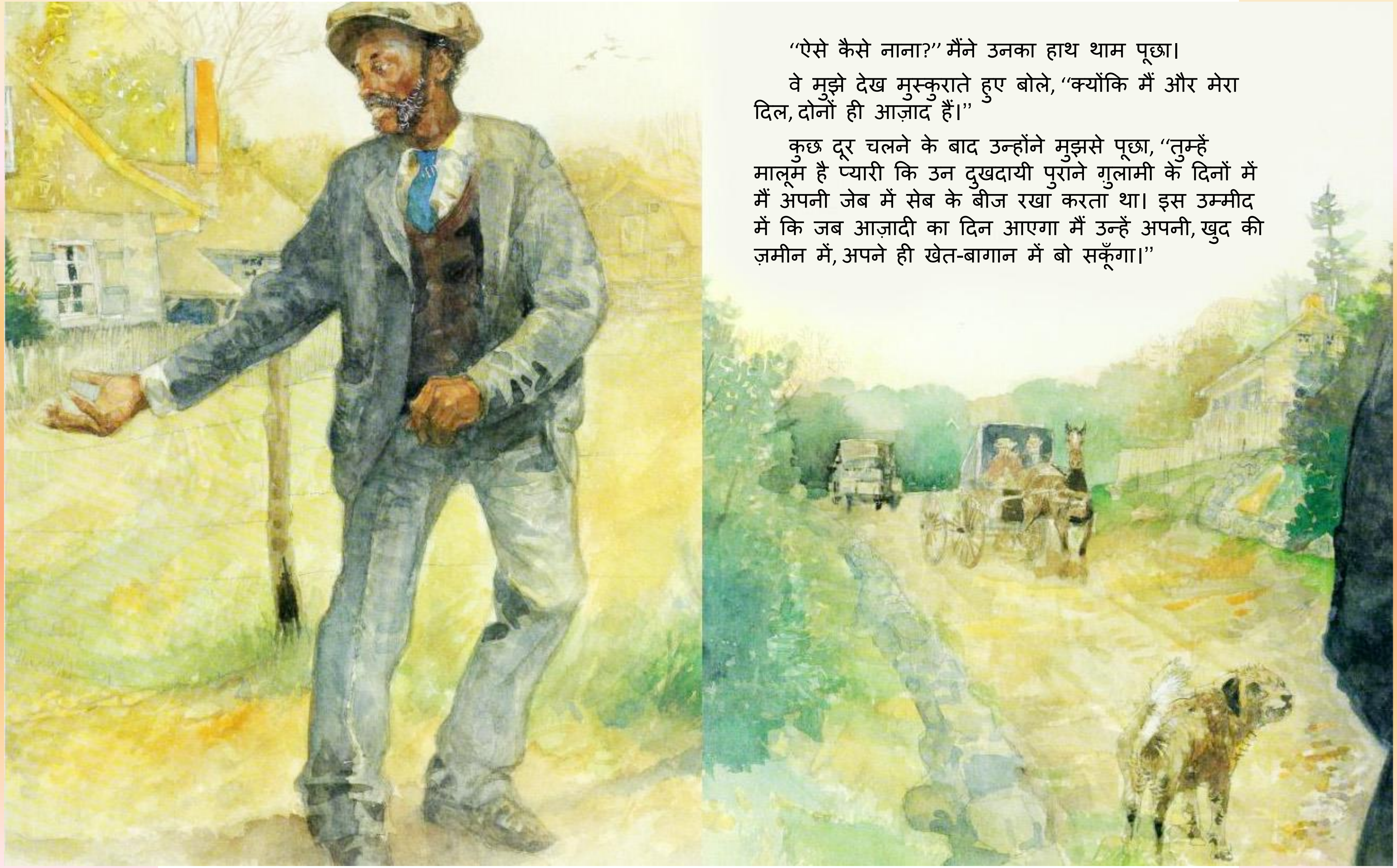
वे रुके ताकि मैं उन तक पहुँच जाऊँ। ''अरे नाम से थोड़े ही जानता हूँ उन सबको - सिर्फ दिल से पहचानता हूँ मेरी रानी ... मेरे लिए ना कोई अनजाना है ना बेगाना!''



“ऐसे कैसे नाना?” मैंने उनका हाथ थाम पूछा।

वे मुझे देख मुस्कुराते हुए बोले, “क्योंकि मैं और मेरा दिल, दोनों ही आज़ाद हैं।”

कुछ दूर चलने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा, “तुम्हें मालूम है प्यारी कि उन दुखदायी पुराने गुलामी के दिनों में मैं अपनी जेब में सेब के बीज रखा करता था। इस उम्मीद में कि जब आज़ादी का दिन आएगा मैं उन्हें अपनी, खुद की ज़मीन में, अपने ही खेत-बागान में बो सकूँगा।”





मैंने सिर हिलाया। मैं यह जानती न थी।

“पर तब एक दिन मुझे सूझा,” नाना ने बात जारी रखते कहा, “कि यह तब तक नहीं हो सकेगा जब तक हम ख़ुद अपनी आज़ादी की ओर कदम न उठाएंगे!”

“सो हमने तैयारी की...और पहला मौका मिलते ही एक रात हम भाग निकले।”







“हम मतलब कौन, नाना?”

“मैं, तुम्हारी नानी और हमारी नन्ही बिटिया, मतलब तुम्हारी माँ,” नाना ने मेरे घुंघराले बालों को प्यार से उलझाते कहा। “बेशक हम डरे-सहमे थे। पर चौकन्ने, बिलकुल चुप थे, और हमारे कदम मज़बूत थे।”

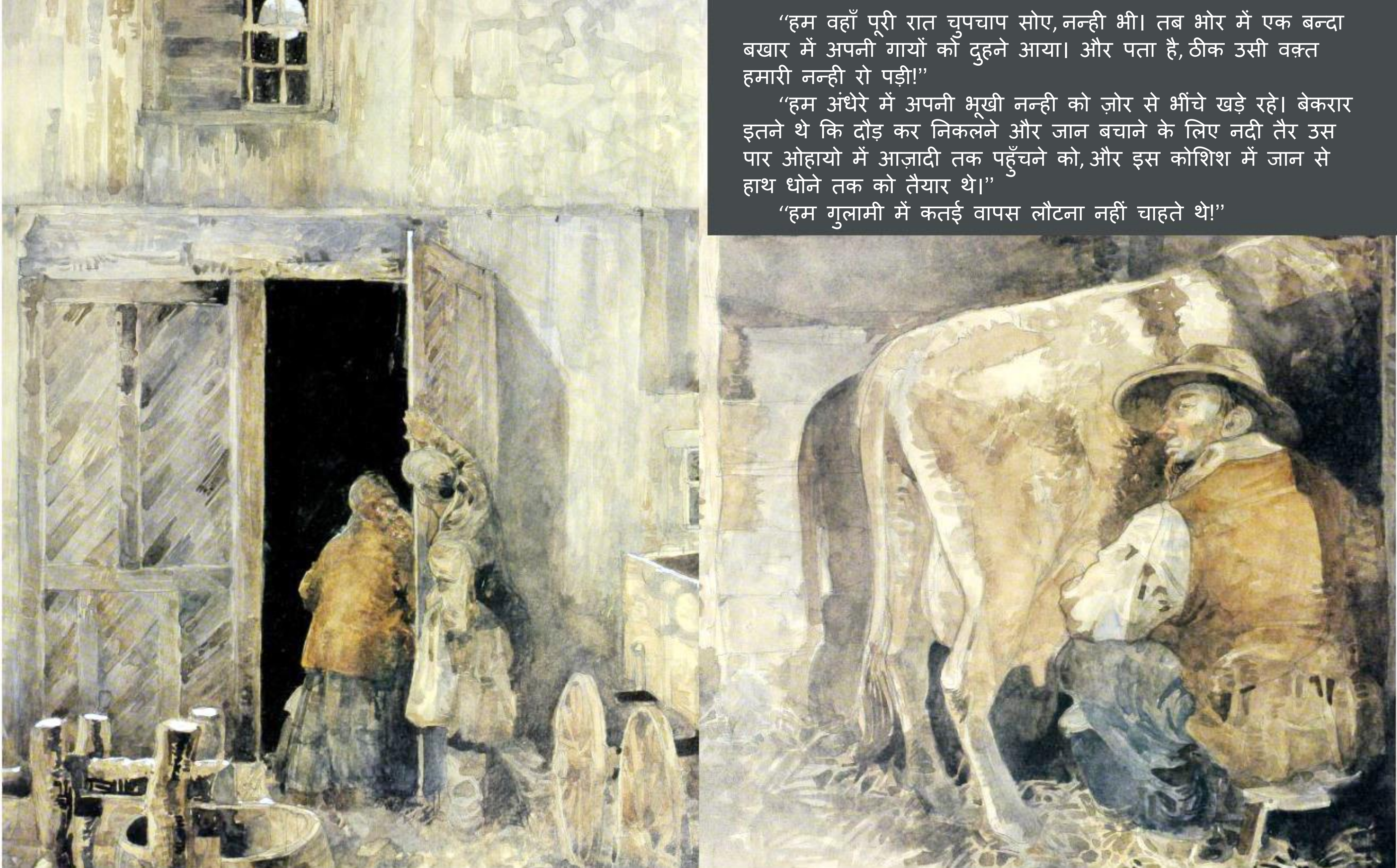
पुरानी यादों को ताज़ा करते नाना ने चलना बन्द कर दिया।

“अजनबियों और ख़तरों से बचते-बचाते हम उत्तर में काफ़ी दूर तक चले आए। पर तब तक हम इतने थके और भूखे हो चुके थे कि एक भी कदम बढाना दूभर था। सो हमने पास नज़र आ रही एक बखार को छिपने के लिए चुना।”

"हम वहाँ पूरी रात चुपचाप सोए, नन्ही भी। तब भोर में एक बन्दा बखार में अपनी गायों को दुहने आया। और पता है, ठीक उसी वक़्त हमारी नन्ही रो पड़ी!"

"हम अंधेरे में अपनी भूखी नन्ही को ज़ोर से भींचे खड़े रहे। बेकरार इतने थे कि दौड़ कर निकलने और जान बचाने के लिए नदी तैर उस पार ओहायो में आज़ादी तक पहुँचने को, और इस कोशिश में जान से हाथ धोने तक को तैयार थे।"

"हम गुलामी में कतई वापस लौटना नहीं चाहते थे!"







"अरे नहीं!" मैं तो इस ख़याल से ही कांपने लगी। हालांकि मैं जानती थी कि मेरे नाना बिलकुल महफ़ूज़ थे, मेरे साथ ही थे। मैं उनसे लिपट गई।

"ज़ाहिर है कि अंधेरे के बावजूद उस बन्दे को पता चल गया कि बखार में कोई और है," नाना ने आगे जोड़ा। "पर सोचो तब क्या हुआ?"

मैंने फ़िक्र से भरी नज़रें नाना की ओर उठाईं।

"उस शख़्स ने चाम का रंग नहीं देखा। उसने सिर्फ़ यह देखा कि हम मुसीबत में थे। वह शख़्स गोरा था, पर उसने हमारे साथ इन्सानियत का सुलूक किया।"

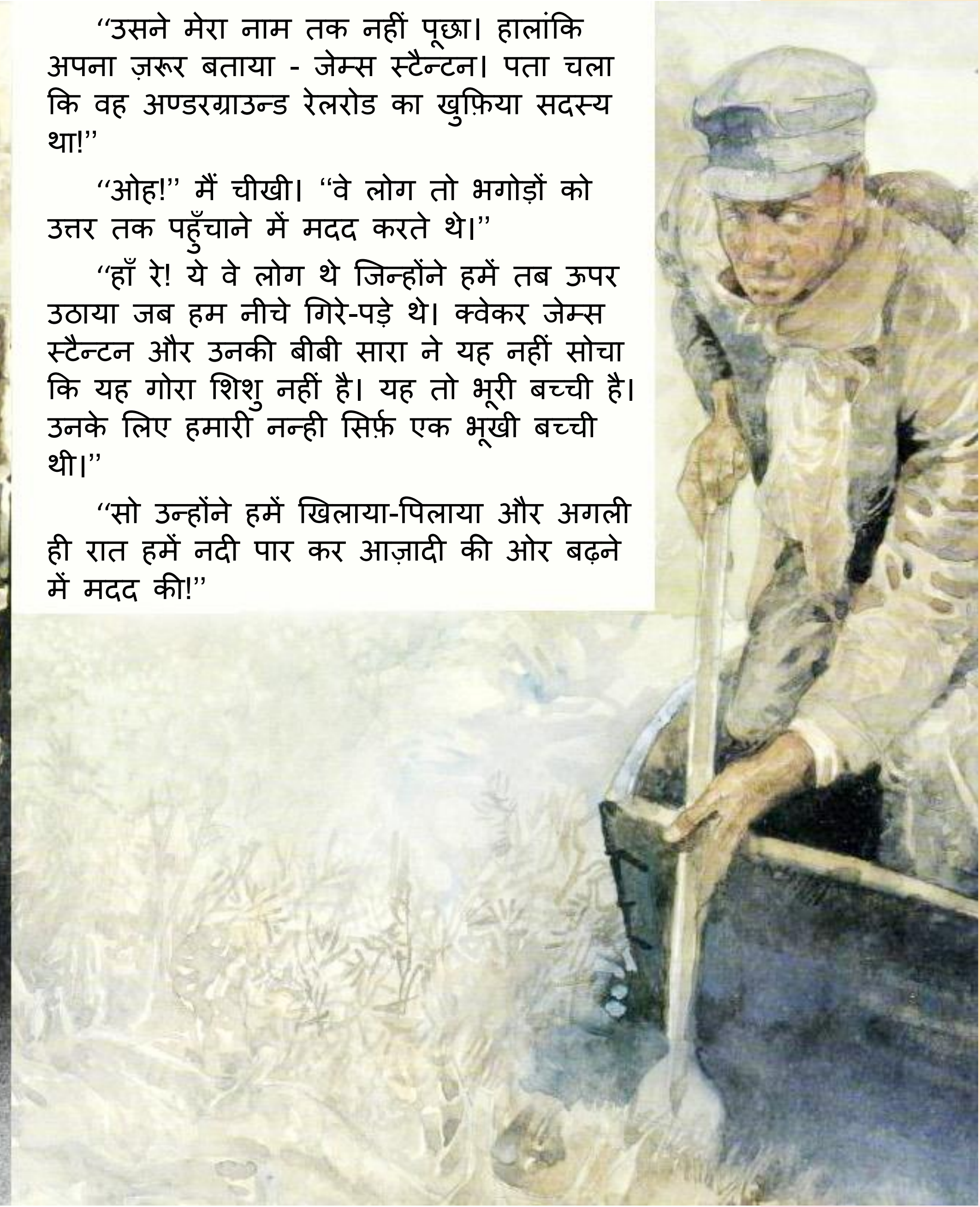


"उसने मेरा नाम तक नहीं पूछा। हालांकि अपना ज़रूर बताया - जेम्स स्टैन्टन। पता चला कि वह अण्डरग्राउन्ड रेलरोड का खुफ़िया सदस्य था!"

"ओह!" मैं चीखी। "वे लोग तो भगोड़ों को उत्तर तक पहुँचाने में मदद करते थे।"

"हाँ रे! ये वे लोग थे जिन्होंने हमें तब ऊपर उठाया जब हम नीचे गिरे-पड़े थे। क्वेकर जेम्स स्टैन्टन और उनकी बीबी सारा ने यह नहीं सोचा कि यह गोरा शिशु नहीं है। यह तो भूरी बच्ची है। उनके लिए हमारी नन्ही सिर्फ़ एक भूखी बच्ची थी।"

"सो उन्होंने हमें खिलाया-पिलाया और अगली ही रात हमें नदी पार कर आज़ादी की ओर बढ़ने में मदद की!"

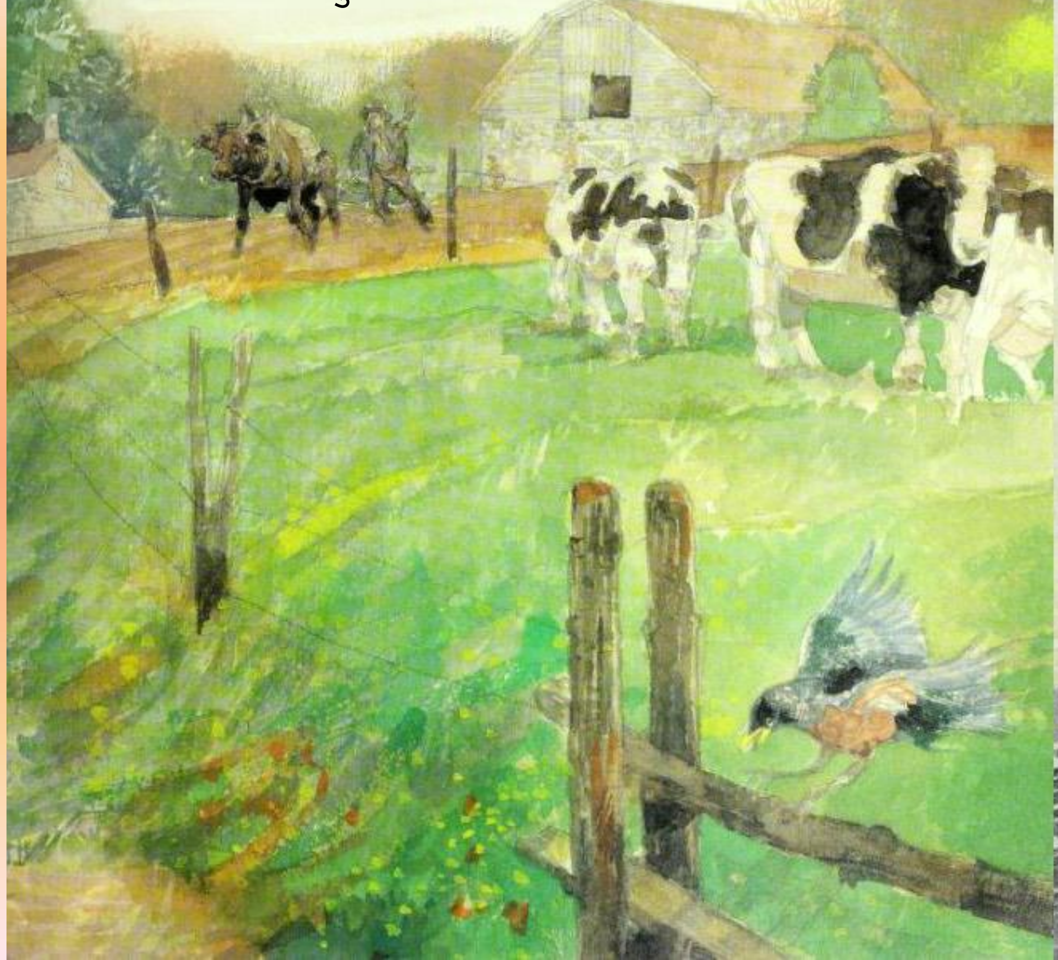






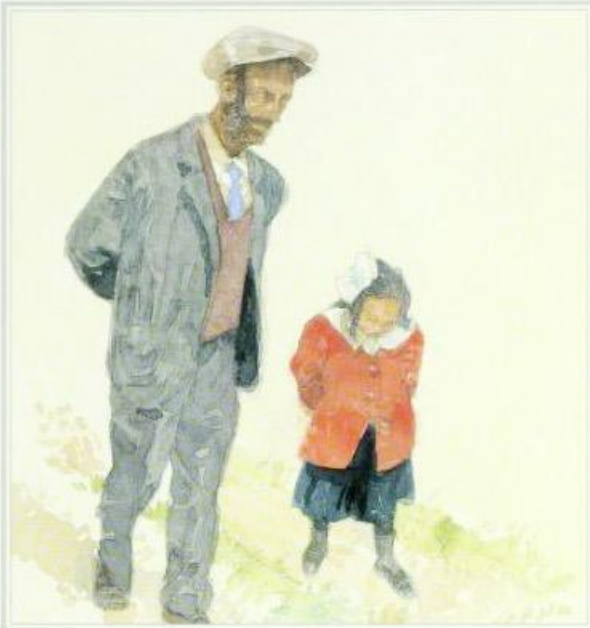
"यह तो आपकी खुशकिस्मती थी नाना," मैंने कहा। अब मैं पूरी तरह महफ़ूज़ महसूस कर रही थी। मेरा हाथ उनकी बाज़ू पर टिका था।

"किस्मत अच्छी थी या नहीं यह तो पता नहीं बिटिया," नाना ने सिर हिलाते कहा। "हमने तो ख़ुदा पर भरोसा रखा। हमने अपने दिल को पक्का रखा, और पूरे रास्ते ज़रूरत के वक़्त हमें मदद मिलती रही। हम अंत-तत पहुँच गए। हाँ, हम वहाँ से, ग़ुलामी से निकल आए..."









“हाँ,” नाना ने हाँ में सिर हिलाते कहा। “मैं तो दोनों ही ओर रहा हूँ। जब कोई गिरता है, तो किस किस्म का इन्सान रुक कर कहता है: ‘मैं अजनबियों को नहीं उठाता! पड़े रहने दो उसे’? कम से कम मैं तो नहीं।”

हम कुछ देर चुपचाप चलते रहे।

जल्दी ही बसन्त की हवा सेब के ताज़े फूलों की खुशबू हम तक उड़ा लाई।

“जब हम दक्षिण से उत्तर पहुँचे,” नाना ने कुछ तेज़ी से चलते हुए कहना जारी रखा, “मैंने और पॉली ने खूब मेहनत-मशक्कत की। हमने देहाड़ी मज़दूरी की, लुहारी की, खेत जोते, सीने-पिरोने का काम किया, सेब तोड़े, गायों को दुहा। तब तक, जब तक हमने अपनी ज़मीन ख़रीदने लायक पैसे न बचा लिए - ठीक यहाँ।”





''लो यह देखो!'' नाना ने बड़े फ़क्र से सेब के पेड़ों पर उगे गुलाबी बादलों तक पहुँच कर कहा। ''वे बीज याद हैं जिन्हें मैं अपनी जेब में लिए घूमता था?''

''मैंने वे बीज लिए और उन्हें अपनी ख़ुद की ज़मीन में रोप दिया। और हरेक बीज को बोते समय मैंने ऐसे किसी इन्सान को याद किया जिसने आज़ादी की राह में हमारी मदद की थी...और अब हम उन्हें फूलता-फलता देख रहे हैं!''





अब नाना ने अपनी दोनों जेबों से एक-एक सेब निकाला।

“ये तो हमारे तहख़ाने से होंगे, है ना नाना?”

“हाँ, मैंने बचा कर रखे थे ताकि तुम्हारे साथ खा सकूँ मेरी प्यारी।”

हम दोनों बैठे और सेब खाने लगे।

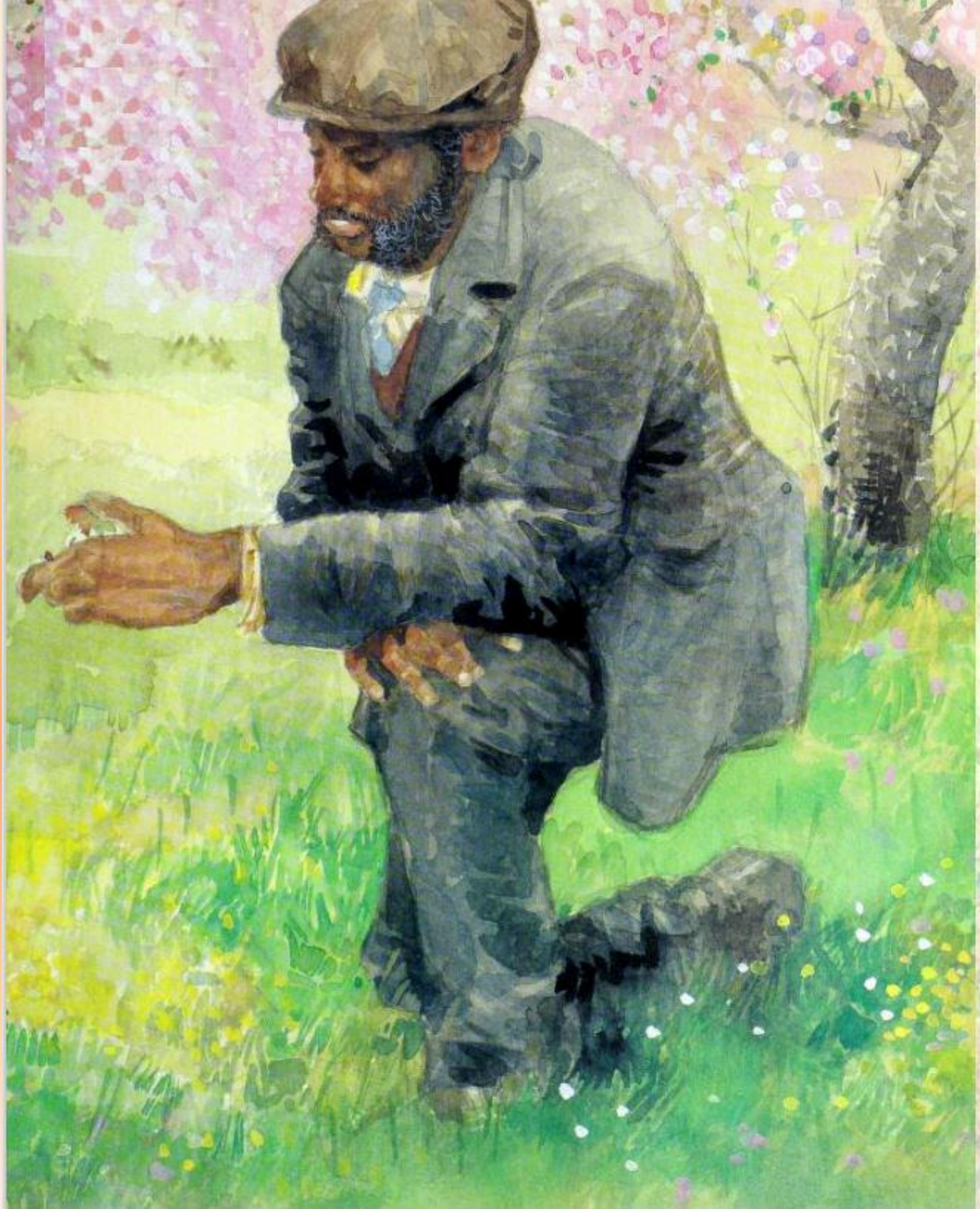
“नाना क्या मैं भी किसी दिन,” मैंने पूछा, “यहाँ अपना एक यादगार बीज बो सकती हूँ?”

नाना हंस पड़े। बात उनके दिल को छू गई। “अरे ठीक अभी करो ना, यह समय भी सही है।”

नाना ने तब मुझे परिवार के फल-बागान में बीज बोते देखा। ये उसी सेब के बीज थे जिसे मैंने कुछ ही पहले खाया था।

मुझे समझ आ गया कि वे भी मन ही मन याद कर रहे थे।





“मैं कभी नहीं भूलूंगा कि तुमने यह किया मेरी प्यारी।” हम जब वापस लौटने के लिए मुड़े तो नाना के चेहरे पर मुस्कान थी।

मैंने अपना हाथ छाती पर रखा। “आपने जो कुछ बताया वह मैं भी नहीं भूलूंगी - कभी-कभी नहीं!”

मुझे पक्का पता था कि मैं सचमें कभी नहीं भुलूंगी।



“तो अब तुम समझी क्यों?” नाना ने रुक कर पूछा। मैंने उनके चेहरे पर बेइन्तहा ख़ुशी देखी। चेहरे को आसमान की ओर उठा उन्होंने हाथ हिला ऊपरवाले को हैलो कहा, और बोले “मेरे लिए ना कोई अनजाना है ना बेगाना।”

